पौराणिकता में जीवन की गाथा

हम सब जब कोई भी शास्त्रगत कहानी, कथा या कोई मार्मिक चित्रण पढ़ते हैं, सुनते हैं तो सिर्फ पढ़ने के भाव से पढ़िएगा और सुनकर अच्छा लगा, ये हम सबके अन्दर एक भाव पैदा होता है। लेकिन कोई भी चीज़ जो बनी है इस दुनिया में, जिसको हम कथाओं के माध्यम से सुनते हैं। उसमें से मूल्यों और कुछ ऐसी चीज़ें उठाने की कोशिश करते हैं जिससे जीवन में बदलाव आये। तो, तो कारगर है, नहीं तो व्यर्थ है। जैसे एक मार्मिक चित्रण जो बहुत ही प्रायोगिक भी है और प्रचलित भी है - वो है कृष्ण और विदुर का संवाद और राम और शबरी का संवाद।

तो कहा जाता है कि कृष्ण ने छप्पन भोग ठुकराये और जाकर विदुर के घर में साग और रोटी खाया। ऐसे ही राम ने शबरी के बेर खाये। अब इन दोनों कहानियों को एक साथ अगर जोड़ा जाये तो भी मर्म है, अगर इनको अलग-अलग समझा जाये तो भी मर्म है। जैसे आपके घर में मैं आऊं, और आकर के बोलूं कि मुझे छप्पन भोग खाने हैं, छप्पन तरह की चीज़ें बना दो, तो आपको खुशी होगी या आपके अन्दर डिस्टर्बेंस क्रियेट हो जायेगी, परेशानी पैदा हो जायेगी कि अरे इतना टाइम तो नहीं है ना हमारे पास, इतना जल्दी छप्पन भोग कैसे बन सकता है, उसके लिए तो टाइम चाहिए। आपने तो आते ही डिमांड कर दी छप्पन भोग की। लेकिन अगर मैं कहूँ दूसरी तरफ से कि आप कुछ भी बना दें, या जो आपके यहाँ बना हुआ है वो ही हमारे लिए अच्छा है। तो उसमें हमको ज़्यादा खुशी होगी। क्योंकि परेशानी नहीं हुई ना। इसीलिए वहाँ ये दिखाया गया कि श्रीकृष्ण ने जाकर विदुर के घर में साग-रोटी खाया माना कि जो विदुर का अर्थ है जो विकारों से दूर हो, वो विदुर है। और विकारों से जो दूर होता है, जो बिल्कुल सात्विक है, शुद्ध है, पवित्र है, उसके यहाँ का कुछ भी स्वीकार करना वो छप्पन भोग के समान ही होता है।

दूसरा उनके, क्योंकि हर एक जो चरित्र है वो हमारे सोच को ब्यान करता है। तो उनकी पत्नी का नाम भी सुल्भा है, सुल्भा का मतलब जो आसानी से उपलब्ध हो जाये। तो जो आसानी से चीज़ें उपलब्ध हो जायें वो हमारे को इज़ी बनायेगा, वो हमारी लाइफ को इज़ी बनायेगा। हमको अच्छा सोचने पर मजबूर करेगा। और उनकी माँ का नाम परिश्रमी था, मतलब जो अपने परिश्रम शब्द का अर्थ उस मेहनत से नहीं लेना है, लेकिन जो अपने श्रम को महत्त्व देता है, कार्य को महत्त्व देता है, परमात्मा के साथ भावनाओं के साथ जुड़ता है। उसके यहाँ सबकुछ सुलभ होता है। उन्हीं के घर में परमात्मा आकर भोजन स्वीकार करते है। तो इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि जो हम सबकी नेचर है, हम सबके अन्दर जो भाव हैं परमात्मा को अपने घर में खिलाने के, वो छप्पन भोग से नहीं खुश होता है वो साधारणता से खुश होता है। वो सादगी से खुश होता है, पवित्रता से खुश होता है, तो इसलिए इन आडम्बरों में हम पड़ गये कि परमात्मा को, भगवान को ये पसंद है। और उसको हमने वहाँ एप्लाई कर दिया। लेकिन ये हमारे जीवन की गाथा है।

हम सबके अन्दर जो भाव हैं परमात्मा को अपने घर में खिलाने के, वो छप्पन भोग से वहीं खुश होता है वो साधारणता से खुश होता है। वो सादगी से खुश होता है, पवित्रता से खुश होता है, तो इसलिए इन आडम्बरों में हम पड़ गये कि परमात्मा को, भगवान को ये पसंद है। और उसको हमने वहाँ एप्लाई कर दिया। लेकिन ये हमारे जीवन की गाथा है।

ऐसे ही शबरी के बेर दिखाये कि ऐसे कोई राम मतलब कोई बहुत बड़ा इंसान, देवता, जब आपके पास आये तो क्या आप उसे झूठे बेर खिलायेंगे! ऐसा तो नहीं है! तो ये अर्थ आज के समय का ही है कि परमात्मा को कहा जाता है कि वो गरीब निवाज़ है। तो गरीब निवाज़ का अर्थ यहाँ ये है कि जिसके पास सबकुछ है लेकिन फिर भी वो उसको ट्रस्टी होकर सम्भालता है, तो परमात्मा उसको प्यार करते हैं। शबरी को वहाँ दिखा दिया कि जब वो रास्ते से गुज़र रहे हैं तो बेर को चख-चख कर उनको दे रही है। और उसको वो ऐसे खा रहे हैं बड़े भाव से। तो इसका मतलब हुआ कि बेर को वैसे भी तो वैर के साथ जोड़ा जाता है। वैर-विरोध के साथ कि हमारे मन में किसी के लिए कोई भाव तो नहीं है, ऐसे। और चख-चख के देना माना चख-चख के बोलना, सोचना। तो जो मैं बोल रही हूँ, जो मैं सोच रही हूँ, वो किसी को खट्टा तो नहीं लग रहा है, किसी को बुरा तो नहीं लग रहा है। कहीं मैं खट्टे शब्द तो नहीं बोल रही हूँ। और आप सोचो कि मुझे फुल टाइम ये सोचना है कि ये वाली चीज़ें परमात्मा को मैं दे रही हूँ। तो जो चीज़ें मैं परमात्मा को दे रही हूँ वो परमात्मा के सामने बैठ कर उसको खिला रही हूँ। तो ज़रूर इसका कोई तो अर्थ ऐसा होगा कि जो हमारे जीवन को जोड़ता होगा। तो हमारा लक्ष्य साथ है लेकिन कई बार क्या होता है जिसने सबकुछ भगवान को दे दिया उसको शबरी कहते हैं।

सबकुछ माना थोड़ा भी जुबान से भी, मुख से, जुबान से, भाव से किसी भी तरह से खट्टा ना देना। सोचना भी नहीं। तो वो है शबरी के बेर।

मतलब हम सभी को पूरी तरह से समर्पित बुद्धि की बात की जाती है। उसको हमको प्रयोग में लाना है तो उसका जो प्रयोग करेगा, उसको जो अपने जीवन में प्रयोग में लायेगा वो परमात्मा को अर्पण होगा ना! ऐसे कैसे कोई शबरी ऐसे कोई रास्ते में बैठी है भगवान उसके पास पहुंच गये और उन्होंने उन्हें बेर खिला दिये। तो ये सारे जो कहानी और कथायें हैं ना इसको हमने पढ़ा-सुना कई बार है लेकिन वो कम्पलीट माना सम्पूर्ण रीति से हमारे जीवन के बदलाव की कहानी है। अगर सच में परमात्मा का प्यार प्राप्त करना है तो सबकुछ उनको अर्पण करना है। हमको विकारों से दूर होना है, तब जाके साधारणता में महानता की जो बात की जाती है ना वो हमको भगवान से प्राप्त होगा। तभी हम जीवन को जी पायेंगे।

प्रश्न : मैं कल्पना हूँ, पुणे से। मेरी उम्र 49 साल है। मैंने अपनी सगी बहन को बहुत सारे पैसे दिए हैं। मैं उससे दो साल से वो पैसे मांग रही हूँ, लेकिन वो मुझे टाल रही है। डेट पर डेट वो मुझे देती जा रही है। पर दे नहीं रही है। जिस वजह से मैं बहुत टेन्शन में रहती हूँ। मन में भी कई बार सवाल उठते रहते हैं कि मैंने उसे पैसा क्यों दिया और उसके कारण मेरी नींद भी चली गई है। कृपया मुझे बतायें कि ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आजकल ऐसी मेंटेलिटी हो गई है कि अपनों से लोगों को बुरा व्यवहार मिलता है। तो फिर मनुष्य के मन में क्या आता है कि किसी को मदद न की जाए। निरसता आ जायेगी सम्बन्धों में। तो इसीलिए मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए। एक बुरा संदेश जाता है समाज को। कोई हमें बता रहा था कि कोई बड़ा अमाउंट हमने दे दिया किसी को विश्वास पर। अब वो कहता है कि मेरे पास तो कुछ नहीं है। मैं मर ही सकता हूँ, इसके अलावा तो कुछ हो नहीं सकता। साथ में धमकी भी दे दी कि तुम्हारे नाम सुसाइड नोट लिख जाऊंगा। इन्होंने पैसे मांगे मैं दे नहीं पाया तो। अब बेचारे फंस गये, इतना बड़ा अमाउंट। जैसे सदा ही हम कहते हैं कि कर्मों की गति को मनुष्य को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। कोई किसी का पैसा लेकर न दे, ये होगा नहीं। उसे देना पड़ेगा। कष्ट भी पायेगा और देना भी पड़ेगा। इसलिए प्यार से दे देना चाहिए। पहले तो मैं आपकी बहन को कहूँगा अगर वो कभी हमें सुनती हो तो जिसका लिया है उसका प्यार से, धन्यवाद देते हुए कि तुमने हमें समय पर मदद की थी, रिटर्न करें। अगर किसी के पास देने को ही न हो तो अपनी बात क्लीयर कर देनी चाहिए। अब आपको क्या करना है, रोज़ सवेरे 21 बार अभ्यास करें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। और दस मिनट अपनी बहन को गुड वायब्रेशन्स दें। संकल्प भी दें कि ये पैसा तो भगवान (शिव बाबा) का है। हम शिवबाबा के हैं तो हमारा सबकुछ शिवबाबा का है। तुम ये प्यार से लौटा दो। हमने तुम्हें समय पर मदद की थी। अब तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम भी लौटा दो। तो गुड वायब्रेशन्स देंगे। ऐसे थॉट्स देंगे और विज़न भी बनायें कि

मन की बातें

वो आ गई है मेरे घर में, और प्यार से, मुस्कुराते हुए सॉरी करते हुए रिटर्न कर रही है। 21 दिन तक ये भी करेंगे। तो आपका पैसा वापस आ जायेगा।

प्रश्न : जहाँ हमने मकान बनाया है, वहाँ पहले किसी की समाधि थी। ऐसा हमको एक सयाने ने बताया। हमने पता भी किया तो वो सही निकला। और जब से हम वहाँ आये हैं तब से बहुत ही बुरे सपने आते हैं, कभी भी कोई छोटे या बड़े काम में हमें सफलता नहीं मिलती। बनते काम भी एंड तक आते-आते बिगड़ जाते हैं। हमने हवन आदि भी करवाया और कई तांत्रिक से भी प्रयोग करायें, उस आत्मा को दूसरी जगह भेजने के लिए। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। क्या उस मकान को बेच दिया जाये? या फिर हम वहाँ रहें तो कुछ समाधान हो सकता है? कृपया बतायें क्या करें? II वर्ष हो गये हैं हमें इस प्रकार की परिस्थिति से जूझते हुए।

उत्तर : बहुत लम्बा समय हो गया है, और आपने करा भी सबकुछ लिया है। क्योंकि जहाँ ऐसी चीज़ होती है वहाँ उन आत्माओं के वायब्रेशन्स रहते ही हैं। और कभी-कभी उन आत्माओं का भी वहाँ वास हो जाता है। अगर वो आत्मायें बड़ी अच्छी हैं, बड़ी कॉपरेटिव हैं तो सब कार्यों में मदद होने लगती है। लेकिन आत्मा बहुत अच्छी नहीं है तो इस तरह की स्थिति बनने लगती है। जैसे आपके साथ बनी। तो आपको दो चीज़ मैं सजेस्ट करूंगा, अगर मकान आदि बेचना सहज हो तो वो भी आपको कर लेना चाहिए। पर बात ये है कि जो लेगा उसको भी इसी परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। इसीलिए अगर इसका एक सुन्दर समाधान हो जाये तो चाहे आप बेच दें उनके लिए भी अच्छा हो, चाहे आप खुद रहें आपके लिए भी कल्याणकारी हो। अगर आपने राजयोग नहीं सीखा है तो हमारे विश्व विद्यालय में प्रति गुरूवार शिव बाबा को, जो सुप्रीम है, जो सद्गुरू है, जो गुरूओं का भी गुरू है उसको हम भोग लगाते हैं। किसी व्यक्ति की तरफ से लगता है वो हर गुरूवार को। तो आपको सेवाकेन्द्र पर जाना चाहिए। कोर्स कर लेना चाहिए और राजयोग सीख लेना चाहिए। ये सारी विधि वहाँ बहनें बता देंगी कि राजयोग कैसे करना है। वो हम भी बहुत चर्चा कर चुके हैं और वहाँ जाकर आपको सात दिन सीखना ही चाहिए। क्योंकि आपके कल्याण के लिए बहुत अच्छी चीज़ होगी। तो जब आप सेन्टर पर जाकर ये सब सीख लेंगी तो आपको क्या करना है कि एक तो रोज़ पानी ले लें एक लोटा और उसको दृष्टि देकर 21 बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। अपने घर में रोज़ एक बार छिड़कने लगें। और संकल्प करें कि यहाँ जो भी आत्मा हो वो मुक्त हो जाये। उसको पुनर्जन्म मिले। दूसरी चीज़ है, उस आत्मा को सात दिन तक भोग खिला दिया जाये। जैसे हम शिवबाबा को भोग लगाते हैं, एक थाली अलग से भोग की रख ली जाये साथ में। और बाबा से रिक्वेस्ट की जाये कि इस आत्मा को भोग खिलाकर मुक्त कर दो। ये बहुत सुन्दर विधि होती है। क्योंकि आत्मायें पवित्र भोजन खाकर भी मुक्त हो जाती हैं। और तीसरी चीज़ है आप 21 दिन के लिए उस आत्मा की मुक्ति अर्थ एक योग भट्ठी कर लें। एक घंटा रोज़ योग। एक स्वमान पहले याद कर लेंगे। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मास्टर मुक्तिदाता हूँ। और इस योग अभ्यास से इस आत्मा की मुक्ति हो। ऐसा संकल्प करके वहीं पर कोई भी एक व्यक्ति जिसका अभ्यास बहुत सुन्दर हो, एक घंटा योग करें 21 दिन। तो ये निश्चित है वो आत्मा पुनर्जन्म ले लेगी। उसकी भी मुक्ति होगी, उसका भी कल्याण होगा। और ये घर उस परिस्थिति से मुक्त हो जायेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com